काव्य हेतू
(काव्य की उत्पति का कारण

काव्य हेतु का अर्थ होता है कि काव्य के निर्माण या लिखने का कारण क्या है?

कहा जाता है कि विश्व में प्रत्येक कार्य के पीछे कोई –न – कोई हेतु या कारण होता है। साहित्य में भी इस नियम को अपनाया जाता है। साहित्य जिसका जीवन से घनिष्ठ संबंध है बिना हेतु के अपनी सार्थकता प्रभावित नहीं कर सकता है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

❖ **काव्य–हेतु संबंधी भारतीय दृष्टिकोण –**

(1) **आ० भामह –** आ० भामह ने काव्यालंकार ग्रंथ में काव्य रचना का मूल कारण प्रतिभा को मानते है।

(2) **आ० दण्डी –** आ० दण्डी ने 'काव्यदर्श रचना में काव्य के तीन हेतुओं को मानते है –

(i) नैसर्गिक प्रतिभा

(ii) शास्त्रों का ज्ञान

(iii) सतत् अभ्यास

(3) आ० वामन – आ० वामन के अनुसार शक्ति के बिना सृजित काव्य उपहास मात्र होगा अतः प्रतिभा ही कवित्व का कारण है ।

(4) आ० मम्मट – आ० मम्मट का मानना है कि शक्ति, निपुणता, लोकशास्त्र ज्ञान, कवि शिक्षा तथा अभ्यास काव्य का हेतु है।

(5) राजशेखर – 'काव्यमीमांशा के रचयिता राजशेखर काव्य हेतु में दो शीर्षकों का समावेश करते है –

(i) शक्ति और (ii) प्रतिभा

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

❖ इस प्रकार सभी आचार्यों ने अपने ग्रंथों में काव्य के प्रमुख रूप से हेतु स्वीकार करते है–

(क) प्रतिभा – बीज
(ख) व्युत्पत्ति – मिट्टी
(ग) अभ्यास – जल

} पौधा / पेड़

❖ प्रतिभा से तात्पर्य सृजन की शक्ति से है वही व्युत्पत्ति के लिए निपुणता का प्रयोग किया गया साथ ही निरंतर प्रयास करते रहने को अभ्यास कहते है।

❖ काव्य प्रयोजन /काव्य उद्येश्य

जिस प्रकार सभी कार्य के पीछे उद्येश्य होता है उसी प्रकार काव्य का भी उद्येश्य होता है । भारतीय काव्य शास्त्रियों का मानना है कि लोकमंगल का विधान करना तथा पाठकों को आनन्द प्रदान करना ही काव्य प्रयोजन है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

(1) आ० भरतमुनि के अनुसार – प्रांरभिक आचार्य भरतमुनि ने अपनी रचना नाट्यशास्त्र में दुःख परिश्रम , शोक तथा पीड़ित मनुष्य को आनन्द प्रदान करना ही काव्य प्रयोजन कहलाता है।

(2) आ० भामह के अनुसार – भामह के अनुसार धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष इन चार पुरूषार्थों की सिद्धि ही काव्य प्रयोजन है।

(3) आ० दण्डी – आ० दण्डी ने अपने काव्यादर्श नामक ग्रंथ में काव्य का प्रयोजन अज्ञानांधकार को नष्ट करके ज्ञान ज्योति का प्रसार करना ही मानते है।

(4) आ० मम्मट ने काव्य के छह प्रयोजन मानते है–

(i) यश (उपलब्धि) प्राप्ति

(ii) अर्थ (धन) प्राप्ति

(iii) व्यवहार ज्ञान

(iv) अमंगल के नाश के लिए

(v) तात्कालिक आनन्दानुभूति

(vi) उपदेश

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

(5) आ० शुक्ल के अनुसार – " मानव के प्रत्येक भाव के लिए आलम्बक (आश्रय) खोज निकालना ही कविकर्म है।

(6) आ० हजारीप्रसाद के अनुसार – द्विवेदी जी मानव कल्याण को काव्य का प्रयोजन मानते है।

❖ निष्कर्षात्मक रूप में सभी आचार्य मानते है कि काव्य का उद्येश्य आनन्द प्रदान करना है। इसलिए इसी काव्यानन्द को ब्रह्मानन्द सहोदर की संज्ञा भी देते है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का